DPN 6955

एकजटी स्तोत्र EKAJAṬĪ STOTRA

Title :

Run. No. 7680 Cat. No. Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn. Religion : Hindu / Bauddha ✓

Language : Skt. ✓ / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 6·3 × 15·6 Folios 2 Lines (in a page) 6

Compl. ✓ / Incompl. Chapt. / act /

Author / translator Scribe / donor ✓ फणीन्द्ररत्न वज्राचार्य

Date: NS ✓ / SS / VS / KS 984. Ruler / place Phanindra Ratna

Script : New. ✓ / Dev. / Bhuj. / Ran. / Illus. : Bajracharya.

Material : palmleaf / paper / thyasaphu ✓ /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning ✓, colophon, post-colophon :

Beg. ॐ नमः श्री एकजतायै ॥

P.T.O.

विकटोत्कट भैरव रूपधरी, गज चर्म प्रयामृत शुभ्रकटी
त्रयलोचन क्रोधकराल मुखी, प्रथ(ण)मामि शुभाकरी स्कन्दटी ॥ १ ॥

Col. इती (ति) श्रीमदेव (क) जटी स्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥
सम्बत् ९८४ न्ति मागसीर कृस्नया षष्ठमि खुनु चोयाजुन
शुभम् ॥

ॐ नमः श्रीएकजटाये ॥ ३ ॥ विकटाकरैनवनूप
धरी ॥ गर्ज चर्म प्रवालन गुरु कटी ॥ उग्रलोचन क्रोध
करालमुखवीडप्रणमामि गुह्यकालि एकजटी ॥ १ ॥
अग्निग्रोद्र जगनिलूषधरि: पट्टमघनिनादविघूर्ण
करी: असि कर्तृकि पातकि गुह्य धरी प्रणमामि गुह्य
काली एकजटी ॥ २ ॥ गगनस्थन नमननकृपागुमनः वि
नस्कन्दस्थान भवबाधकरी: नमु विद्यनि: ओघकृता
नाकरी: प्रणमामि गुह्यकालि एकजटी ॥ ३ ॥ गगनागग
नवसन आयुधधरी: पालयान बलीषदानऊधरी: स्तुतिधा
रत धारवरदायानकरी प्रणमामि गुह्यकाली एकजटी ॥ ४ ॥
हरगन्तासुरसुरगनप्रसन्नकरी: हय: वन्धनदु:खविनाशक
री: नयह मिअपायविघ्नबाधकरी: प्रणमामि गुह्यकारी

कजटीं ॥ ५ ॥ वरधर्म्मजननप्रवर्द्धिकरीं : जयायत्वगुरुल
दधिहन्त्रिकरीं : वरधर्म्म उपायप्रसन्नकरिं । प्रणमामि ह
ताकरिं । त्वकजटिं : ॥ ६ ॥ अमितामहावरधर्म्मधरीं
: गगनोपमशुद्धस्वभावकरिं । वज्रधर्म्मविहारसमा
धिकरीं । त्वकजटिं ॥ ७ ॥ प्रवरऽगजचर्म्मकटिधरीं :
दशाकलालवदनीः बोधिगत बोधकरिं : बोधिंगह
रजनीनीयनित्यविमुक्तिमथनीं ॥ इत्यकनाम शान्तिनीदे
वी त्वकजटीं । नमामि सालदामहे ॥ ८ ॥ ॐ श्री श्रीमदेक
जटीं स्तोत्रं समाप्त ॥ ॥ सम्वत् ७८४ मिति माग
सीर कृष्णया । षष्ठमि पूनु बोयाइ ——— शुभं